9

मुख्य वचनः यूहन्ना 4:20-24

मनाए जाने में अन्तरों पर प्रश्न

कलीसियाएं जब तक यीशु के निर्देशों में बदलाव नहीं करतीं तब तक उन्हें प्रभु-भोज को मनाने में अन्तर का अधिकार है। जो लोग नई वाचा की शिक्षा को बदलते, उसमें जोड़ते, या कम करते हैं वे उस सब को जिसकी यीशु ने आज्ञा दी है न मानकर उसकी आज्ञा तोड़ते हैं (मत्ती 28:20)।

बहाली की लहर के आरम्भ में अधिकतर मण्डलियां प्रभु-भोज में दाखरस का इस्तेमाल करती हैं। 19वीं शताब्दी के अन्त में संयम की लहर ने पूरे अमेरिका में अपना प्रभाव डाल दिया था। तब से अमेरिका की अधिकतर मण्डलियों में अंगूर का रस इस्तेमाल किया जाता है।

इसके अलावा बहाली के उन आरम्भिक वर्षों के दौरान मसीह की कलीसियाओं में अधिकतर केवल एक ही कटोरे का इस्तेमाल होता था। बड़ी मण्डलियां दो कटोरों का इस्तेमाल करने लगीं, जिसमें एक कटोरा मण्डली को देने के लिए और दूसरा उस कटोरे के खाली होने पर उसे भरने के लिए इस्तेमाल होता था। बेथनी, वर्जिनिया (अब पश्चमी वर्जिनिया) में मसीह की कलीसिया जहां थॉमस और अलैग्ज़ैंडर कैम्पबेल प्रचार करते थे, दाख का रस बांटने के लिए दो कांस्य के कटोरों का इस्तेमाल करती थीं। एक कटोरा सभागार के पुरुषों वाली साइड के लिए और दूसरा स्त्रियों की साइड के लिए होता था। स्त्रियां उन पुरुषों के झूठे बर्तन में से नहीं पीना चाहती थीं जो तम्बाकू लेते थे।

बहुत से कटोरों का चलन आरम्भ हो गया क्योंकि 19वीं शताब्दी में टीबी के खतरनाक प्रभाव से कलीसियाओं को थाली में छोटे-छोटे कपों में देने वाले एक एक कप का इस्तेमाल शुरू करना पड़ा।[1] टीबी होने के खतरे के बावजूद कुछ मण्डलियों ने इस विश्वास से कि परमेश्वर उन्हें बीमार होने से बचाएगा, केवल एक कटोरे का इस्तेमाल जारी रखा।

केवल एक कटोरे में से क्यों?

यीशु ने कहा कि यह कटोरा तुम्हारे लिए बहाया जाता है (लूका 22:20)। यूनानी भाषा की व्याकरण के अनुसार, ''बहाया'' जाने वाला ''कटोरा'' था न कि उसमें का सामान जो यीशु के लहू का प्रतीक है। व्याकरण के अनुसार ['']जो बहाया जाता है''] *potērion* [''कटोरा''] के साथ चलने वाला वाक्यांश है परन्तु अर्थविज्ञान के अनुसार यह लहू की बात करता है।[2] इस आयत में यीशु के कहने का अर्थ था कि उसका लहू क्रूस पर बहाया जाएगा, न कि वह कटोरा जिसमें से प्रेरितों ने पीना था उनके लिए बहाया जाना था।

कुरिन्थुस के नाम लिखते हुए पौलुस ने कटोरे के सामान की बात की न कि कटोरे की जब उसने कहा, ''... कटोरे में से पी'' (1 कुरिन्थियों 10:21; 11:25-28)। कोई मूलतया शारीरिक

कटोरा नहीं पीता है। ''कटोरा'' अलंकार है। जब हम कहते हैं, ''उसने पूरी प्लेट खा ली,'' तो हमारे कहने का अर्थ होता है कि किसी ने वह सारा खा लिया जो प्लेट में था न कि यह कि उसने प्लेट खा ली। एक और उदाहरण है ''बच्चे ने'' अपनी बोतल पी ली। बेशक इसका अर्थ यह नहीं है कि बच्चे ने वास्तव में बोतल ही पी ली, बल्कि इसका अर्थ यह है कि उसने वह दूध पी लिया जो बोतल में था।

जब यीशु ने ''यह कटोरा'' कहा तो वह उस कटोरे के अन्दर पड़ी चीज़ की बात कर रहा था जो उसके हाथ में था (लूका 22:20; 1 कुरिन्थियों 11:25)। यदि उसके कहने का अर्थ उसमें पड़ी चीज़ के बजाय वह समान होता तो केवल कटोरा ही होता जिसका इस्तेमाल किया जा सकता था। संसार की हर मण्डली के लिए उसी कटोरे का इस्तेमाल करना आवश्यक होता जो प्रभु-भोज को मनाने के लिए यीशु ने अपने हाथ में पकड़ा था।

यहां पर ''प्रभु का कटोरा'' 1 कुरिन्थियों 10:21 वाले ''दुष्ट आत्माओं के कटोरे'' से बढ़कर एक कटोरा नहीं है। यह वाक्यांश किसी विशेष बर्तन में से पीने के लिए नहीं बल्कि उसमें पड़ी चीज़ें पीने से। वह कटोरा जिसमें से काफिर लोग पीते थे एक विशेष कटोरा नहीं बल्कि दुष्टात्माओं की पूजा में इस्तेमाल होने वाला पेय था। इसी प्रकार से प्रभु का कटोरा पेय है यानी कटोरे का समान जिसे पूरे संसार में सब मसीही लोगों द्वारा इस्तेमाल में लाया जाता है, न कि कटोरा।

यदि ''कटोरा'' कहने से यीशु का अभिप्राय दाख का रस होता न कि उसका बर्तन, तो प्रेरितों को वही पीना था। जब हम दाख के रस में से पीते हैं तो हम यीशु के लहू अर्थात सुसमाचार के विवरणों में बताए गए वाचा के लहू को स्मरण करते हैं (मत्ती 26:28; मरकुस 14:24; लूका 22:20)।

पहली वाचा जिसे परमेश्वर ने इस्राएल के साथ बांधा था, पशुओं के लहू के साथ बांधी गई थी (इब्रानियों 9:18)। दाख के रस द्वारा दर्शाए गए यीशु के लहू से नई वाचा बांधी गई थी।

प्रभु का ''कटोरा'' अर्थात दाख का वह रस जो कटोरे में था, ही हर युग के सब लोगों के लिए एक कटोरा है। जिस प्रकार से याकूब के कुएं पर पीने वालों ने (यूहन्ना 4:12) उस कुएं से पानी निकालने तक सदियों से कई बर्तनों का इस्तेमाल किया (यूहन्ना 4:12)। वैसे ही यीशु के एक कटोरे को पीने के लिए ही कई बर्तन आवश्यक हैं, चाहे यह एक व्यक्ति के लिए एक हो या एक मण्डली के लिए एक हो।

इसमें कोई नुकसान नहीं है यदि कोई मण्डली केवल एक बर्तन में से पीने को प्राथमिकता दे, पर एक बर्तन के इस्तेमाल की मांग और इस मामले पर फूट डालना ऐसे नियम थोपना है जो मसीह की शिक्षा में नहीं पाए जाते। यदि नये नियम में कहा गया है कि ''सब एक कटोरे में से पीएं,'' तो केवल एक ही कटोरे का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। बर्तनों की संख्या के सम्बन्ध में ऐसा कोई नियम नहीं है जिस कारण यह निर्णय प्रत्येक मण्डली पर छोड़ दिया जाता है।

केवल एक रोटी लेने पर क्या विचार है?

यीशु की ''एक'' और केवल ''एक देह'' है, जिसमें यीशु की सभी मण्डलियां हैं। इसी ''एक देह'' का इस्तेमाल किसी विशेष मण्डली के लिए नहीं किया गया बल्कि उसकी सभी

मण्डलियों के लिए सामूहिक रूप में है। 1 कुरिन्थियों 10:16, 17 में पौलुस यह नहीं कह रहा था कि ''एक रोटी'' एक देह अर्थात कलीसिया द्वारा दी जाने वाली केवल एक रोटी है। इसके बजाय एक रोटी पूरे संसार में फैली मण्डलियों की उसकी एक देह द्वारा खाए जाने वाले कई टुकड़े है।

आर. सी. एच. लेंसकी ने टिप्पणी करते हुए कि ''वह समस्त मसीही कलीसियाओं में सहभागिता के प्रति तथ्यों में इस्तेमाल की जाने वाली पूरी रोटी की बात कर रहा है, और इस पूरी रोटी को वह *eis artos* ['अर्थात एक रोटी'] कहता है।''[3]

परमेश्वर ने कोई पसन्द नहीं दी हैं इस कारण मण्डलियां एक या अधिक रोटियां या कटोरों का इस्तेमाल करना चुन सकती हैं। रोटी और दाख का रस आवश्यक हैं, पर एक रोटी और एक कटोरा नहीं। यरूशलेम की कलीसिया के कई हज़ार सदस्यों (प्रेरितों 2:41; 4:4) जो सुलेमान के ओसारे में इकट्ठा होते थे (प्रेरितों 5:12) एक बर्तन से देने के लिए बहुत बड़ी रोटी और बहुत बड़ा कटोरा चाहिए था।

अधिक सम्भावना यह है कि जब यीशु ने प्रभु-भोज की स्थापना की तो प्रत्येक प्रेरित ने अपने अपने कटोरे में से पिया था। यह संदर्भ और फसह के दौरान अपने अपने कटोरों का इस्तेमाल करने की प्रथा पर आधारित एक सही निष्कर्ष प्रतीत होता है।

क्या सहभागिता के दौरान गाना आवश्यक है?

सहभागिता के दौरान कुछ मण्डलियां गाना गाती हैं। आइए हम इस प्रथा पर दो अवलोकन करते हैं।

पहला, पौलुस ने एक समय से एक से अधिक व्यक्ति को बोलने की अनुमति नहीं दी (1 कुरिन्थियों 14:27-30)। उसने लिखा कि वे ''बारी-बारी'' से बोलें। चर्चा को समाप्त करते हुए, उसने लिखा, ''पर सारी बातें सभ्यता और क्रमानुसार की जाएं'' (1 कुरिन्थियों 14:40)। मैं न केवल वक्ताओं को एक समय में एक जन को बोलने के लिए बल्कि सब बातें क्रमानुसार करने के लिए भी कहता हूं ''क्रमानुसार'' का अनुवाद *taxis* से किया गया है जिसका अर्थ ''ठहराए हुए क्रम'' में एक के बाद एक ''क्रम में'' की जाने वाली गतिविधियां हैं न कि एक ही समय में दोनों के लिए।[4] हमारी आराधना क्रमानुसार होनी चाहिए। क्रमानुसार किए जाने वाले काम का उद्देश्य किसी गतिविधि की रुकावट पढ़ने से बचाना था। कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति पर प्रचार करते हुए ज़ोर ज़ोर से प्रार्थना करने लगे तो दूसरे सदस्यों को प्रार्थना करने या प्रवचन पर ध्यान लगाने में कठिनाई आती होगी।

दूसरा, सहभागिता के दौरान गीत गाना व्यक्तिगत मनन में रुकावट डालता है। आराधक के लिए एक ही समय में गीत के बोलों पर और यीशु के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध पर ध्यान लगाना कठिन हो सकता है। भोज के साथ गाने के बजाय गीत उसके पहले या बाद में होना चाहिए।

रोटी और दाखरस दिए जाने के दौरान या दोनों प्रतीकों के दिए जाने से पहले एक प्रार्थना करने का कोई बाइबली संकेत या निर्देश नहीं है। यीशु के नमूने का पालन करने और दो प्रार्थनाएं करना सुरक्षित ढंग है जिसमें एक प्रार्थना रोटी दिए जाने से पहले और दूसरी दाखरस दिए जाने से पहले हो और खाने और पीने के समय उसकी मृत्यु पर ध्यान किया जाए।

''प्रीति भोज'' होना चाहिए या नहीं?

पवित्र शास्त्र में ''प्रीति भोज'' का एकमात्र हवाला यहूदा 12 में मिलता है। नये नियम में ऐसी कोई जानकारी नहीं दी गई है कि यह कैसे कब या कहां लिया जाता था। दूसरी शताब्दी के लेखकों ने लिखा है, पहली सदी के मसीही लोग रविवार सुबह सुबह प्रभु-भोज लेते थे, जो आ तौर पर काम पर जाने से पहले होता था, फिर वे इकट्ठे खाना खाने के लिए शाम को इकट्ठा होते थे।

> दिन में बाद में होने वाला इकट्ठ, जो शाम को होता होगा, रात्रि भोज के लिए होता था। यह खाना सम्भवतया ''प्रीति भोज'' (*अगापे,* यहूदा 12) था जिसे दिन के मुख्य भोजन के समय शाम को लिया जाता था।[5]

> इस खाने के संदर्भ में प्रभु-भोज के लिए कोई स्थान नहीं है। और टरटोरियन का दूसरा प्रमाण इस समय प्रीति भोज के भाग के रूप में प्रभु-भोज के अभी भी विरुद्ध है।[6]

एवरट फर्ग्यूसन ने लिखा है कि कलीसिया के इतिहास के आरम्भ से, मसीही लोग सामान्य भोजन के साथ साथ प्रभु-भोज लेते होंगे। ''*डिडेक्* वाला यूखरिस्त एक सामाजिक भोजन के संदर्भ से मेल खाता लगता है। यह कलीसिया के आरम्भिक दिनों में सामान्य स्थिति हो सकती है।''[7]

फिलिप्प सैफ़ ने भी यही विचार दिया है:

> पहले तो भोज को **प्रीतिभोज** से जोड़ा गया था और फिर यह अपने चेलों के साथ यीशु के अन्तिम भोज के स्मरण में शाम को दिया जाता था। पर इतनी जल्दी से दूसरी सदी के आरम्भ में यह दोनों बातें अलग हो गईं थीं, और सहभागिता को सुबह के समय कर दिया गया और प्रीति भोज को शाम को।[8]

न तो फ्रग्यूसन ने और न ही शैफ ने कोई दस्तावेज़ दिया है कि प्रेरितों, या परमेश्वर की प्रेरणा पाए किसी और व्यक्ति ने प्रभु-भोज और प्रीतिभोज दोनों को एक ही समय और एक ही स्थान पर दिए जाने की अनुमति दी थी। पौलुस ने समझाया कि प्रभु-भोज में और भोजन में स्पष्ट अन्तर किया जाना आवश्यक है (1 कुरिन्थियों 11:20-26, 33, 34), जिसका अर्थ यह होगा कि प्रभु-भोज के साथ सामान्य भोजन खाने का विचार परमेश्वर की ओर से नहीं बल्कि मनुष्य की ओर से होना था।

कुरिन्थुस के लोगों के लिए पौलुस के निर्देश से स्पष्ट पता चलता है कि प्रभु-भोज को सामान्य भोजन से पूरी तरह से अलग किया जाना था। उसने लिखा कि मसीही लोग अपना खाना घर में खाएं, न कि प्रभु-भोज के साथ। ''क्या खाने पीने के लिए तुम्हारे घर नहीं? या परमेश्वर की कलीसिया को तुच्छ जानते हो, और जिन के पास नहीं है उन्हें लज्जित करते हो?'' (1 कुरिन्थियों 11:22क); ''यदि कोई भूखा हो, तो अपने घर में खा ले जिस से तुम्हारा इकट्ठा होना दण्ड का कारण न हो'' (1 कुरिन्थियों 11:34क)।

ट्राजन के नाम छोटे प्लाइनी के पत्र में कहा गया कि मसीही लोग पहले सुबह-सुबह आराधना करते थे, फिर वे शाम को सामान्य भोज के लिए इकट्ठा होते थे। ''... मसीही लोग

सूर्योदय के समय एक ठहराए हुए दिन (रविवार) को इकट्ठा होते। ... उसके बाद (शाम को) वे फिर से सामान्य और बेदाग भोजन खाने के लिए (अगापाये) फिर इकट्ठा होते।''[9]

पहली सदी के दौरान यदि भोज और प्रतिभोज एक ही दिन लिए जाते थे, तो वे उस दिन के एक ही समय पर नहीं खाए जाते थे। मसीही लोगों के लिए प्रभु-भोज के साथ प्रीतिभोज खाने का कोई निर्देश नहीं दिया गया। सामान्य भोजन या प्रीतिभोज को इसके साथ मिलाना गलत है।

प्रभु-भोज की स्थापना चाहे फसह के भोज के बाद की गई, पर यह इस बात को साबित नहीं करता कि यीशु ने इसके सम्बन्ध में सामान्य भोजन की इच्छा की। फसह वाचा का भोजन नहीं है बल्कि यादगारी का भोजन है।

आई. होवर्ड मार्शल ने यहूदी *क्विदुश,* या आशीष का भोजन पर ध्यान दिलाया है:

> फिर यह सुझाव दिया जाता है कि ऐसा भोजन [*kiddush*] प्रभु-भोज के नमूने के लिए दिया गया। परन्तु विभिन्न विद्वानों द्वारा यह ज़ोर दिया गया है कि ऐसा कोई प्रमाण नहीं है कि यहूदी *haburoth* में ऐसा खाना हो जो किसी भी प्रकार से सामान्य यहूदी खानों से अलग हो, और अन्तिम भोज की मुख्य विशेषताओं के आरम्भ की यह व्याख्या चर्चा से निकाल दी जानी चाहिए।
>
> पर यह शिक्षा कि यीशु का भोज एक *kiddush* [आशीष] का भोजन था असम्भव है क्योंकि सब्त या पर्व क दिन से ठीक पहले आम यहूदी भोजन के अलावा किदुश भोजन जैसी कुछ बात नहीं थी, और सब्त वाला किदुश हमारी गणना के अनुसार शुक्रवार शाम को पड़ता था, जबकि यीशु ने अपना भोज गुरुवार शाम को ठहराया। पर्व के सामान्य भोज से पूर्व शाम को एक विशेष फसह के किदुश की शिक्षा भी एक कल्पना है।[10]

यरूशलेम की कलीसिया मण्डली के रूप में शायद सुलैमान के ओसारे में मन्दिर में इकट्ठा होती थी (2:46क; 5:12ख)। वे ''रोटी तोड़ने'' और ''घर घर रोटी तोड़ने'' (प्रेरितों 2:42, 46ख) में लौलीन रहे। ''*रोटी तोड़ने* के शब्द आराधना सभाओं में शिक्षा, संगति और प्रार्थनाओं के सम्बन्ध के बीच में मिलते हैं। इसलिए हम इस शब्द का अर्थ पवित्र सहिभागिता के मनाने के लिए एक आरम्भिक विवरण के रूप में समझते हैं।''[11]

मण्डली अपने सामान्य भोजन अपने अपने घरों में खाती थी, न कि प्रभु-भोज के साथ। ''यरूशलेम में, विश्वासी लोग प्रतिदिन अपने भोजन का आनन्द लेते थे (आयत 46क), जैसा यूनानी भाषा में लूका संकेत देता है कि इसी प्रकार हमें भी प्रभु-भोज के मनाए जाने से सामान्य भोजन को अलग करना चाहिए।''[12] प्रमाण पक्का है कि प्रभु की देह, यरूशलेम की कलीसिया की पहली मण्डली सामान्य भोजन या प्रीतिभोज को प्रभु-भोज के साथ नहीं मिलाती थी।

प्रभु-भोज के सम्बन्ध में पांव धोने पर क्या विचार है?

कुछ लोग प्रभु-भोज के साथ पांव धोने को जोड़ देते हैं। पांव धोना एक धार्मिक समारोह नहीं बल्कि गन्दे पांव साफ़ करने के उद्देश्य से विनम्रतापूर्वक सेवा को दिखाना था। सचमुच की विधवा जिसे कलीसिया की ओर से सहायता मिल सकती थी, उसने अन्य सेवाओं के अलावा पांव लोगों के पांव भी धोने होते थे (1 तीमुथियुस 5:10)। यह आराधना का नहीं बल्कि विनम्र

सेवा और आतिथ्य का एक कार्य था।

यदि पांव धोना आराधना के भाग के रूप में किया जाना आवश्यक है तो नया नियम यह बताने में नाकाम है कि इसे कौन, कैसे और कब कर सकता है। इस नाकामी का अर्थ यह होगा कि यीशु के मन में आराधना की बात नहीं बल्कि दीन सेवा का नमूना होगा।

यीशु ने यह नहीं कहा, ''मैंने तुम्हें नमूना दे दिया है कि तुम भी वही करो जो मैंने किया है,'' बल्कि ''जैसा [*kathos*, ''इस प्रकार से''] मैंने [किया है]'' (यूहन्ना 13:15)। वह अपने चेलों को दूसरों की सेवा वैसे ही करनी सिखा रहा था। जैसे उसने उनके पांव धोकर विनम्रता से उनकी सेवा की, जिसमें पांव धोना भी हो सकता है, पर यह यहीं तक सीमित है।

सारांश

वे सब लोग जो यीशु को प्रसन्न करना चाहते हैं उन्हें लगन के साथ उसके वचन का अध्ययन करना और सावधानीपूर्वक उसे मानना चाहिए। यह बात प्रभु-भोज मनाए जाने सहित मसीही जीवन के हर पहलु में लागू होती है। मसीही युग में हर किसी का विचार उसके वचन के अनुसार होगा (यूहन्ना 12:48), न कि मनुष्यों के विचारों ''परम्पराओं और शिक्षाओं से।''

टिप्पणियां

[1]पॉल एम. ब्लोअर एण्ड बायरन सी. लैम्बर्ट, *द इन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ द स्टोन-कैम्पबैल मूवमैंट,* सम्पा. डग्लस ए. फ़ोस्टर, पॉल एम. ब्लोअर्स, एंथनी एल. डनेवेंट, एण्ड डी. नेवल विलियम्स (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 2004), 491. [2]जे. रेलिंग एण्ड जे. एल. स्वेलेंग्रेबल, *ए ट्रांसलेटर'स हैंडबुक ऑन द गास्पल ऑफ लूक* (न्यू यार्क: यूनाइटिड बाइबल सोसाइटीज़, 1971), 688. [3]आर. सी. एच. लैंस्की, *द इंटरप्रिटेशन आफ़ सेंट पॉल'स फर्स्ट एण्ड सेकण्ड एपिस्टल टू द कोरिंथियंस* (कोलम्बस, ओहायो: वाटरबर्ग प्रैस, 1946), 412. [4]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक इंग्लिश-लैक्सिकन ऑफ द न्यू टैस्टामेंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 3रा संस्क, संशो. एवं सम्पा. फ्रेड्रिक डब्ल्यू. डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 989. [5]एवरेट फर्ग्यूसन, *अरली क्रिश्चियंस स्पीक* (अबिलेन, टैक्सस: बिब्लिकल रिसर्च प्रैस, 1981), 84; प्लाइनी *लैटरर्स* 10.96. [6]फर्ग्यूसन, 85. [7]वही, 99. [8]फिलिप शैफ़, *हिस्टरी ऑफ़ द क्रिश्चियन चर्च,* अंक 1 (न्यू यार्क: चार्ल्स स्क्रिब्नर एण्ड कं., 1869), 395. [9]वही, 382. [10]आई. हॉवर्ड मार्शल, *लास्ट सप्पर लॉर्ड'स सप्पर* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1980), 20.

[11]साइमन जे. किस्टमेकर, *न्यू टैस्टामेंट कमैंटरी,* एक्सपोज़िशन ऑफ़ द ऐक्ट्स ऑफ़ द अपोस्टल्स (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1990), 111. [12]वही, 113.

क्या वाचा के भोजन को प्रभु-भोज से मिलाया जाना चाहिए?

कुछ लोग भोज के साथ वाचा के भोजन को परमेश्वर के साथ वाचा की मोहर के रूप में नमूने के लिए पुराने नियम की ओर देखते हैं। कुछ मानवीय वाचाएं भोजन खाने से बांधी गई थीं। अबीमिलेक और इसहाक ने यह दिखाने के लिए कि उनके मतभेद मिट गए हैं और अब वे अपनी वाचा के कारण मित्र बन गए हैं एक दूसरे के साथ खाना खाया (उत्पत्ति 26:26-31)। वाचा के चिह्न के रूप में जो याकूब और लाबान ने बांधी थी पत्थरों का एक बड़ा ढेर लगा दिया। इसके बाद याकूब ने कुर्बानी दी और लाबान और याकूब ने भाई बंधुओं के साथ इकट्ठे खाना

खयाा (उत्पत्ति 31:44-54)।

परमेश्वर ने इस्राएल के सत्तर पुर्निंयों के साथ मूसा, हारून, नादाब और अबीहू को ''दूर से दण्डवत'' करने के लिए बुलाया (निर्गमन 24:1); पर बाइबल के लेख में ऐस कोई संकेत नहीं है कि यह वाचा से सम्बन्धित था। वाचा के दिए जाने के बाद, वे पहाड़ पर गए और उन्होंने यहोवा के सामने खाया और पिया (निर्गमन 24:3-11)। इसके बाद मूसा और यहोशू पहाड़ पर अकेले गए और वे पट्टियां प्राप्त की जिनके ऊपर वाचा अर्थात दस आज्ञाएं लिखी गई थीं (निर्गमन 24:12-18; 34:27, 28)।

पूरे इस्राएल द्वारा खाने के बजाय केवल पुर्निंयों ने खाया और वह भी केवल एक बार। यदि भोजन का सम्बन्ध वाचा से था, तो सारे इस्राएलियों ने क्यों नहीं खाया, क्योंकि वाचा तो उनके साथ भी थी?

वाचा दिए जाने के समय मूसा ने भोजन खाने के बजाय चालीस दिन और रात दो बार उपवास किया (निर्गमन 34:27, 28; व्यवस्थाविवरण 9:9, 11, 18, 25)। क्या यह इस बात का संकेत हैं कि उपवास का सम्बन्ध नई वाचा से होना चाहिए?

बेशक वाचा के दिए जाने के साथ भोजन जुड़ा हुआ था, पर यह इस बात को साबित नहीं करता कि यीशु ने प्रभु-भोज के भाग के रूप में भोजन के खाए जाने का प्रबन्ध किया। वचन कहीं ऐसा नहीं बताता कि ऐसी बात थी। यीशु और प्रेरितों ने उसके भोज की स्थापना से *पहले* फसह का भोजन खाया; पर उसके बाद खाना नहीं खाया गया, क्योंकि उसके थोड़ी देर बाद वे जैतून पहाड़ की ओर कूच कर गए (मत्ती 26:30; मरकुस 14:26; लूका 22:39)। नई वाचा को अगले दिन से पहले यीशु के लहू के साथ नहीं दिया गया।[1]

संक्षेप में, यह तथ्य कि भोजन कुछ मानवीय वाचाओं के साथ जुड़े थे, यह साबित नहीं करता कि प्रभु-भोज के साथ खाना खाया जाना आवश्यक है। (1) कोई भी भोजन परमेश्वर द्वारा बांधी गई वाचाओं के भाग के रूप में साबित नहीं किया जा सकता। (2) पहली वाचा के दिए जाने के बाद केवल पुर्निंयों ने खाया, न कि सब लोगों ने। (3) कोई भी भोजन वाचा के साथ खाया जाना जारी नहीं रहा। (4) फसह का भोजन न तो वाचा का और न प्रभु-भोज का भाग था। (5) मसीही लोगों के लिए प्रभु-भोज के साथ वाचा के भोजन को खाने का न तो कोई नमूना है और न निर्देश। (6) यीशु का लहू दिया गया और नई वाचा दिए जाने के लिए कोई खाना नहीं खाया गया। (7) परमेश्वर की पुरानी और नई वाचा लहू के साथ बांधी गई थी, पर मण्डली के भोजन करने के सम्बन्ध में नहीं (निर्गमन 24:7, 8; इब्रानियों 9:15-17)। (8) पौलुस के लेखों और कलीसिया के आरम्भिक इतिहास से पता चलता है कि भोजन को प्रभु-भोज के साथ जोड़कर नहीं खाना चाहिए।

टिप्पणी

[1]परमेश्वर की कुछ वाचाओं के साथ चिह्न थे, पर वे भोजनों के साथ नहीं जुड़ी थीं (उत्पत्ति 9:11-17; 15:18; 17:2-21; लैव्यव्यवस्था 2:13; गिनती 25:11-13; व्यवस्थाविवरण 29:1; भजन संहिता 89:3, 4)।